दीप्रसङ्गातनुच्छायाङ्गिन्नकेशनखादिकम्।
अनमार्जारेरेणुच हन्ति पुण्यं पुराकृतम्॥"
इति कर्म्मलोचनः॥
"अजरजः खररजस्तथा सम्मार्ज्जनीरजः।
स्त्रियः पादरजो राजन्! शक्रादपि हरेत् श्रियम्॥"
इति लक्ष्मीचरित्रम्॥

धूलिका, स्त्री, (धूलिरिव प्रतिभाति। "इवे प्रतिकृतौ।" ५।३।९६। इति कन्। टाप्।) कुज्झटिका। इति शब्दरत्नावली॥ (नीहारः। यथा, नीहारे वाणशब्दे चेति इत्यत्र नीहारे धूलिकायामिति मनुटीकायां कुल्लूकभट्टः॥)

धूलिकेदारः, पुं, (धूलिप्रधानः केदारः। इति मध्यलोपिसमासः।) वप्रः। क्षेत्रम्। इति त्रिकाण्डशेषः॥

धूलिगुण्ठकः, पुं, (धूलीनां गुण्ठक इव। इवार्थे कन्।) पटवासकः। फलगुण्ठूर्णम्। इति त्रिकाण्डशेषः॥

धूलिध्वजः, पुं, (धूलिरेव ध्वजो यस्य।) पवनः। इति त्रिकाण्डशेषः॥

धूलिपुष्पिका, स्त्री, (धूलिः परागस्तत्प्रचुरं पुष्पं यस्याः। कापि अत इत्वम्।) केतकी। इति राजनिर्घण्टः॥

धूलीकदम्बः, पुं, (धूलीनां कदम्बमत्र।) नीपः। तिनिशः। वरणवृक्षः। इति मेदिनी। बे, १७॥ (धूलिसमूहे, क्ली॥)

धूलीकदम्बकः, पुं, (धूलीकदम्ब+स्वार्थे कन्।) नीपः। इति जटाधरः॥

धूलीपटलः, पुं, (धूलीनां पटलं यत्र।) उड्डीयमानधूलीसमूहः। यथा, धूलीपटले धूमलभ्रमे तत्रासता धूमलेन। इत्यादि सामान्यलक्षणायां शिरोमणिः॥ (धूलीसमूहे, क्ली॥)

धूश, क कान्तिक्षतौ। इति कविकल्पद्रुमः॥ (चुरां-परं-सकं-सेट्।) वल्लरी। कान्तिक्षतिः शोभितकरणम्। चन्दनो धूशयत्यङ्गम्। इति दुर्गादासः॥

धूष, क धूशे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (चुरां-परं-सकं-सेट्।) वल्लरी। धूशः कान्तिक्षतिः। चन्दनो धूषयत्यङ्गम्। इति दुर्गादासः॥

धूस, क धूशे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (चुरां-परं-सकं-सेट्।) वल्लरी। धूशः कान्तिक्षतिः। क, धूसयत्यङ्गं चन्दनः। महिषधूसरितः सरितस्तटमिति जानकीहरणमकाण्डान्यान्यान्यमिति रमानाथः। स्वमते तालव्यमूर्द्धन्यान्तोऽप्ययम्। इति दुर्गादासः॥

धूसरः, पुं, (धुनातीति। धू+"क्रधूमदिभ्यः कित्।" उणां ३। ७३। इति सरन्। स च कित्।) ईषत्पाण्डुवर्णः। तद्वति, त्रि। इत्यमरः। १। ५। १३॥ (यथा, रघौ। ११। ६०।
"श्लेषपक्षिपरिधूसरासका:
सान्द्रमेघरुधिराद्रिवासवः॥")
खरः। गर्द्दभः। कपोतः। इति राजनिर्घण्टः॥ तेषवारः। इति हेमचन्द्रः। ६। २६॥ ॥

धूसरवस्तूनि यथा। धूलिः १ लूता २ करभः ३ गृहगोधिका ४ कपोतः ५ धूपिका ६ रङ्गम् ७ काककङ्कः ८ खरादि ९। इति कविकल्पलता॥

धूसरच्छदा, स्त्री, (धूसरं ईषत् पाण्डुवर्णच्छदो यस्याः।) श्वेतदूर्वा। इति रत्नमाला॥

धूसरपत्रिका, स्त्री, (धूसरं पत्रमस्याः। ङीप्। स्वार्थे कन्। टापि पूर्व्वह्रस्वः।) हस्तिशुण्डीक्षुपः। इति राजनिर्घण्टः॥

धूसरा, स्त्री, (धूसर+टाप्।) पाण्डुरफलीक्षुपः। इति राजनिर्घण्टः॥

धूसरी, स्त्री, (धूसर+ङीप्।) किन्नरीभेदः। इति मेदिनी। रे, १७०॥

धूस्तूरः, पुं, (धूस् कान्तिकरणे+भावे क्विप्। तं तूर्य्यते हिनस्तीति। तूर हिंसे+"इगुपधज्ञेति।" ३। १। १३५। इति कः।) धूस्तूरवृक्षः। इत्यमरटीकायां भरतः॥

धृ, क धृष्टान्। इति कविकल्पद्रुमः॥ (चुरां-परं-सकं-अनिट्।) क, धारयति। इति दुर्गादासः॥

धृ, ड अवभ्रंसे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (भ्वां-आत्मं-अकं-अनिट्।) अवभ्रंसः पतनम्। ड, धरते पत्रं वृक्षात्। गोविन्दभट्टस्तु अविध्वंसने इति पठित्वा विध्वंसनं ध्वंसनं तस्याभावोऽविध्वंसनं ध्वंसनमिति व्याख्याति। इति दुर्गादासः॥

धृ, ड ध्र स्थितौ। धृतौ। इति कविकल्पद्रुमः॥ (तुदां-आत्मं-स्थितौ अकं-धृतौ सकं-अनिट्।) ड ध्र, ध्रियते। इति दुर्गादासः॥

धृ, ञ धृष्टान्। इति कविकल्पद्रुमः॥ (भ्वां-उभं-सकं-अनिट्।) ञ, धरति धरते। इति दुर्गादासः॥

धृज, गतौ। इति कविकल्पद्रुमः॥ (भ्वां-परं-सकं-सेट्।) धर्ज्जति। इति दुर्गादासः॥

धृज, द गतौ। इति कविकल्पद्रुमः॥ (भ्वां-परं-सकं-सेट्। इदित्।) सम्भ्रमस्वरौ। द, धृज्जति। इति दुर्गादासः॥

धृतः, त्रि, धृवातोः कर्म्मणि कर्त्तरि च क्तप्रत्ययेन निष्पन्नः॥ धारणविशिष्टः। धरा इति भाषा। (यथा, महाभारते। १। ७४। १०३।
"अश्वमेधसहस्रञ्च सत्यञ्च तुलया धृतम्।
अश्वमेधसहस्राद्धि सत्यमेव विशिष्यते॥")
अवभ्रष्टः। पतित इति यावत्। स्थितः। (स्थिरीकृतः। निश्चितः। यथा, महाभारते। ७। १६। ६८।
"धृतां धनञ्जयवधे प्रतिज्ञामपि चक्रिरे॥"
पुं, त्रयोदशमनो रौच्यस्य पुत्रविशेषः। यथा, हरिवंशे। ७। ८२।
"चित्रसेनो विचित्रश्च त्रयो धर्म्मधृतो धृतः।
सुनेत्रः शत्रुहन्ता च धृतया निर्भयो दृढः।
रौच्यस्येते मनोः पुत्रा अन्तरे तु त्रयोदशे॥"
हस्तुपश्रीयधर्म्मस्य पुत्रः। यथा, भागवते। ८। २१। १४।
"इन्द्रोरुतनयो बभुः सेतुस्तस्यात्मजस्ततः।
आरब्धस्तस्य गान्धारस्तस्य धर्म्मस्ततो धृतः॥")

धृतराष्ट्रः, पुं, (धृतं राष्ट्रं येन।) दुर्य्योधनपिता। स जन्मान्धः शान्तनुपुत्रः विचित्रवीर्य्यक्षेत्रे व्यासाज्जातः। इति महाभारते। १। ६५। ५५॥ (अयं हि गन्धर्व्वपतेर्हंसस्य अंशावतारः। यथा, महाभारते। १। ६७। ८४।
"अरिष्टायास्तु यः पुत्रो हंस इत्यभिविश्रुतः।
स गन्धर्व्वपतिर्ज्ञेयः कुरुवंशविवर्द्धनः॥")
सुराजा। नागभेदः। इति मेदिनी। रे, २७१॥ (यथा, महाभारते। २। ९। ९।
"कम्बलाश्वतरौ नागौ धृतराष्ट्रबलाहकौ॥")
पक्षिभेदः। इति विश्वप्रकाशः॥ (गन्धर्व्वविशेषः। यथा, विष्णुपुराणे। २। १०। १५।
"ब्रह्मापेतोऽथ ऋतजित् धृतराष्ट्रोऽथ सप्रभः॥")
बलिराजस्य पुत्रविशेषः। यथा, हरिवंशे। ३। ७४।
"बलेः पुत्रशतस्यासाद्बाणज्येष्ठं नराधिप!।
धृतराष्ट्रश्च सूर्य्यश्च चन्द्रमाश्चेन्द्रतापनः॥"
जनमेजयस्य ज्येष्ठपुत्रः। यथा, महाभारते। १। ९४। ५४।
"जनमेजयस्य तनया भूरि ख्याता महाबलाः।
धृतराष्ट्रः प्रथमजः पाण्डुर्बाह्लीक एव च॥")

धृतराष्ट्री, स्त्री, (धृतराष्ट्रस्य पत्नी। ङीप्।) हंसपत्नी। इति मेदिनी। रे, २७२॥ (यथा, महाभारते। १। ६६। ५७, ५९।
"काकीं श्येनीं तथा भासीं धृतराष्ट्रीं तथा शुकीम्।
ताम्रा तु सुषुवे देवी पञ्चैता लोकविश्रुताः॥"
"धृतराष्ट्री तु हंसांश्च कलहंसांश्च सर्व्वशः।
चक्रवाकांश्च भद्रं ते जनयामास सैव तु॥"
हंसपदीलता। इति हेमचन्द्रः॥)

धृतिः, पुं, (ध्रियते इति। धृ+क्तिन्। अभिधानात् पुंस्त्वम्।) इष्टिः। इति मेदिनी। ते, २९॥ (विश्वेदेवविशेषः। यथा, महाभारते। १३। ९१। ३०।
"वसुं धृतिर्विभावाञ्च पुण्यञ्चैव तथा॥")
चन्द्रवंशीयनृपविशेषस्य विजयस्य पुत्रः। यथा, हरिवंशे। ३१। ५५।
"विजयस्य धृतिः पुत्रस्तस्य पुत्रो धृतव्रतः॥"
निमिवंशीयानामेकतमः। यथा, भागवते। ९। १३। २६।
"सुनकस्तत्सुतो जज्ञे वीतहव्यो धृतिस्ततः॥"
यदुवंशीयवसोः पुत्रः। इति विष्णुपुराणे। ४। १२। १५। "रोमपादाद्बभ्रुः वसोः पुत्रो धृतिः॥")

धृतिः, स्त्री, (धृ+क्तिन्।) तुष्टिः। (यथा, मनुः। ६। ९२।
"धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म्मलक्षणम्॥")
ज्ञानभेदः। धैर्य्यम्। (यथा, वाजसनेयसंहितायाम्। ३४। ३।